प्रस्तावना (प्रथम संस्करण)

प्राचीन भारतीय साहित्य का अवलोकन करते हुए यह पाया गया है कि इसमें जलविज्ञान के ज्ञान का असीमित भंडार उपलब्ध है। इसने संस्थान को भारतीय साहित्य में छिपे जलविज्ञानीय खजाने की संपत्ति को संकलित करने के लिए विभिन्न उपलब्ध प्राचीन साहित्य का गहन अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह रिपोर्ट जलविज्ञान के विभिन्न घटको की प्रक्रियाओं और उनकी सहभागिता पर जानकारियों के संकलन का एक प्रयास है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में जलविज्ञानीय जानकारी पर अध्ययन करते समय यह प्रत्यक्ष और प्रशंसा योग्य था कि पिछली 3 शताब्दियों में जिन जलविज्ञानीय अवधारणाओं की खोज और आविष्कार किया जा रहा है, वे 3000 ईसा पूर्व से भी पहले प्राचीन भारतीय साहित्य में अच्छी तरह से ज्ञात और प्रलेखित थे।

अन्य विज्ञानों की तरह, जल का विज्ञान भी प्राचीन भारत में अच्छी तरह से विकसित था। यह खेदजनक है कि वर्तमान में हमारे प्राचीन भारतीय विज्ञानों पर पर्याप्त ध्यान और सम्मान नहीं दिया जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम लोगों ने एक धारणा विकसित कर ली है कि प्राचीन भारतीय विज्ञान ने आधुनिक विज्ञानों के सामने, जो कि वर्तमान स्थिति बहुत विकसित हो गए हैं, अपनी सारी उपयोगिता खो दी है। लेकिन यदि कोई प्राचीन भारतीय विज्ञान की वास्तविक खूबियों को समझने की कोशिश करता है, तब हमारी यह अवधारणा गलत साबित होगी । उम्मीद है कि वर्तमान रिपोर्ट जल विज्ञान के क्षेत्र में इसको साबित करने में सक्षम होगी।

किए गए अध्ययन से पता चलता है कि भारतीय जलविज्ञानीय अनुसंधान क्षेत्र पूरी तरह से अन्वेषित नहीं किया गया है। प्राचीन भारतीय साहित्य में जलविज्ञान के ज्ञान की खोज करने वाली इस तरह की रिपोर्ट आज की एक महती आवश्यकता बन गई है, खासकर जब आधुनिक युग में जल विज्ञान ने भारत में अपनी सही जगह पा ली है। मुझे यकीन है कि अगर प्राचीन भारतीय जल विज्ञान को पुनर्जीवित किया जाता है और व्यावहारिक उपयोग के लिए लाया जाता है तो यह भारत के लिए विशेष रूप से और मानव जाति के लिए बहुत लाभकारी साबित होगा ।

इस मूल्यवान दस्तावेज को श्री टी.एम. त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'बी' और संस्थान के अन्य वैज्ञानिको और कर्मचारियों द्वारा तैयार किया गया है । देश के कई पुस्तकालयों से परामर्श किया गया, लेकिन यहां पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार और सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पुस्तकालयों का विशेष उल्लेख किया जाना उपर्युक्त होगा ।

दिनांक: 7 सितंबर, 1990

(सतीश चंद्र)
निदेशक